



International Journal of Veterinary Sciences and Animal Husbandry



ISSN: 2456-2912
VET 2018; 3(4): 34-36
© 2018 VET
www.veterinarypaper.com
Received: 23-05-2018
Accepted: 28-06-2018

डॉ. लक्ष्मी चौहान

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन
महाविद्यालय, महु, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. अशोक कुमार पाटिल

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन
महाविद्यालय, महु, मध्य प्रदेश, भारत

वैज्ञानिक विधि से मांस हेतु बकरियों का पोषण

डॉ. लक्ष्मी चौहान, डॉ. अशोक कुमार पाटिल

प्रस्तावना

बकरी एक बहुउद्देशीय उत्पादकता वाला महत्वपूर्ण पालतू पशु है क्योंकि इससे दूध, मांस खल, बाल एवं खाद जैसी उपयोगी वस्तुएं प्राप्त होती है। भारत वर्ष में बकरी को गरीब गाय कहा जाता है क्योंकि गाय एवं भैंस की तुलना में बकरियों के छोटे आकार के कारण इन पर रखरखाव एवं खान-पान पर कम खर्च आता है। अतः एक निर्धन किसान भी इसे आसानी से पाल सकता है हमारे देश का बकरी पालन की दृष्टि में विश्व में प्रथम स्थान है। भारत वर्ष में बकरियों की संख्या अधिक होते हुए भी मांस एवं दूध उत्पादन शीतोष्ण कटिबंधीय देशों की तुलना में कम है। इसके प्रमुख कारण अपर्याप्त भोज्य संसाधन, गर्मी, बीमारी की समस्याएं एवं संगठित रूप से बकरी पालन न करना (1) केवल चराई (2) सीमित चराई एवं पूरक आहार खिलाई (3) पशु शाला में खिलाई ये तीन प्रकार की चराई विधियाँ प्रचलित है

हमारे देश में विकसित चारागाह का अभाव होने के साथ – साथ जो चारागाह है वे भी मनुष्य द्वारा भूमि का कृषि हेतु बढ़ते उपयोग एवं पशुओं के मध्य गंभीर प्रतिस्पर्धा के फलस्वरूप विलोपित होते जा रहे हैं। अतः इन परिस्थितियों में बकरियों की विस्तृत क्षेत्र में केवल चराई कराना असंभव हो रहा है एवं ऐसी चराई से बकरियों को संतुलित आहार भी नहीं मिल पाता है। अतः बकरियों के पोषण हेतु सीमित चराई एवं पूरक आहार प्रदाय कराना जरूरी हो गया है। इन परिस्थितियों से प्रतीत होता है कि भविष्य में संभवतः पूर्णरूप से बकरियों की पशुशाला में खिलाई करना होगी। यह देखा गया है कि बकरियों को पशुशाला में रखा जाता है तो आहार पर खर्च कुल व्यय का 50 प्रतिशत से अधिक भी हो सकता है। इसलिये बकरी पालकों को आहार आदि का ज्ञान जितना अधिक होगा आय बढ़ाने की आशा उतनी ही अधिक होगी।

वर्तमान परिस्थितियों एवं भविष्य की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए बकरियों के पोषण की पद्धति कैसी होनी चाहिए, इसका ज्ञान होना आवश्यक है जिसकी जानकारी इस अध्याय में दी जा रही है। किसी भी जाति के पशु की पोषण पद्धति के अध्ययन के पूर्व उस जाति के पशुओं की सेवन प्रवृत्ति, पोषण के सिद्धांत एवं विशेषताओं की जानकारी होना आवश्यक है। निम्न जानकारी बकरीपालकों के लिये बकरियों के विधिवत पोषण हेतु लाभदायक होगी।

बकरियों की सेवन प्रवृत्ति में अन्य पशु जैसे गाय, भैंस एवं भेड़ की अपेक्षा कुछ भिन्नता के कारण पोषण सिद्धांत में भी कुछ भिन्नता होती है। बकरी पोषण की विशेषताएं निम्नानुसार हैं :-

1. बकरी पीछे के दोनों पैरों पर खड़े होकर अच्छी तरह जांच परख या चयनोपरांत ही विभिन्न प्रकार के भोज्य पदार्थों का सेवन करती है। बकरी के चरने के प्रवृत्ति को "ब्राउजिंग" कहते हैं।
2. बकरियाँ कई प्रकार की खाद्य सामग्री जैसे – झाड़ियों के पत्तों, जंगली घास, वृक्षों की पत्तियाँ, खरपतवार एवं अन्य प्राकृतिक पौधों का सेवन भली – भाँति करती है। ये सामग्री गोवंशी पशुओं एवं भेड़ों द्वारा पसंद नहीं की जाती है।
3. बकरियाँ कड़वा, मीठा, नमकीन एवं खट्टा स्वादों में अन्तर कर सकती है। यह देखा गया है की क्षमता अधिक होती है।
4. यह भी पाया गया है कि एक बकरी को रुचिकर लगने वाले पदार्थों की खोजों में बकरियाँ गायों की अपेक्षा लगभग दुगुनी दूरी तक जा सकती हैं।
5. खाद्य पदार्थों के मिट्टी इत्यादि में सने (गंदा) होने पर बकरियाँ इन्हें ग्रहण नहीं करती है।
6. बकरियाँ एक ही तरह के खाद्य पदार्थ को कम पसंद करती हैं। अतः उसके आहार में विभिन्न किस्म के खाद्य अवयवों का उपयोग करना आवश्यक हो जाता है। विभिन्न किस्मों को खाद्य पदार्थों में भी ये प्राथमिकता के आधार पर चयन करती है।
7. बकरियाँ की चरने की आदत वर्ष में विभिन्न ऋतुओं के अनुसार परिवर्तित होती है।

Correspondence

डॉ. लक्ष्मी चौहान

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन
महाविद्यालय, महु, मध्य प्रदेश, भारत

- देशी बकरियाँ आहार की गुणवत्ता एवं शारीरिक अवस्था अनुसार शरीर के वनज का 2.5 – 5.5 प्रतिशत शुष्क भोज्य पदार्थ का सेवन करती हैं, जो कि अन्य जुगाली करने वाले पशुओं की सेवन क्षमता से अधिक है।
- बकरियाँ वृद्धिशील पौधों की मुलायम पत्तियाँ एवं टंडलों का ही सेवन करती हैं एवं कठोर टंडलों एवं तनों को छोड़ देती हैं।
- यह भी पाया गया है कि बकरियाँ चराई के दौरान किसी एवं पौधों को एक निश्चित समय तक सेवन कर उसे छोड़ देती हैं एवं दुबारा उसे नहीं खाती हैं।
- बकरियाँ की रेशेदार सूखे चारे को पचाने की क्षमता भेड़ एवं गोवंशी पशुओं से अधिक होती है। अतः ऐसे आहार से अन्य पशुओं की तुलना में बकरियाँ को अधिक ऊर्जा मिलती है। इसलिये बकरियों में भेड़ एवं अन्य गोवंशी पशुओं की अपेक्षा पशु खाद्यों की शारीरिक उपलब्धता अधिक होती है।
- पानी के संरक्षण एवं उपयोग की दृष्टि से बकरियाँ अन्य पशुओं की अपेक्षा अधिक योग्य पशु है। क्योंकि बकरी शरीर में जल का उपयोग धीमी दर से होता है इसी कारण बकरियों में जल की कमी को सहन करने की क्षमता अधिक पाई जाती है।
- अलग-अलग नस्ल की बकरियों में सेवन प्रवृत्ति में भी भिन्नता पाई गई है। उदाहरण के लिये सानेन वीटल संकर नस्ले गेहूँ के पुआल का सेवन नहीं करती हैं, परन्तु जमुनापारी एवं वीटल नस्ल की बकरियाँ बड़े चाव से इसे खाती हैं।
- भेड़ों की अपेक्षा बकरियों के अमाशय (पेट) की क्षमता कम होती है। अतः प्रतिदिन का आहार तीन-चार बार में प्रदाय करना उचित होता है।
- सांद्र मिश्रण जिसमें की स्टार्जयुक्त अनाज का अनुपात ज्यादा है या शीरा मिला हुआ है तो यूरिया का प्रयोग नत्रजन के स्रोत के रूप में किया जा सकता है। बकरी आहार में कुल प्रोटीन मात्रा का 30-40 प्रतिशत तक प्रोटीन, यूरिया द्वारा बिना किसी नुकसान के दिया जा सकता है। यूरिया का प्रयोग बकरी आहार में 4 माह की उम्र उपरान्त ही किया जाता है।
- बकरी के आहार में दाने या किसी अन्य नये आहार या यूरिया इत्यादि का समावेश त्वरित रूप से नहीं करना चाहिये एवं धीरे-धीरे प्रारंभ करना उचित होता है।
- बकरीयों के आहार में दाना मिश्रण की मात्रा उपलब्ध चारे की गुणवत्ता एवं मात्रा पर निर्भर करती है। पौष्टिक हरा चारा उपलब्ध होने पर दाने की मात्रा आधी की जा सकती है।

1. मांस उत्पादन हेतु बकरियों का पशुशाला में खिलाई हेतु निम्न तीन प्रकार के आहार (जन्म से मांस के लिये बाजार में बेचने की उम्र तक) प्रदाय किये जाते हैं।

- क्रीप/स्टार्टर आहार (नवजात मेंमनों का आहार)
- गोबर आहार (वृद्धिशील मेंमनों का आहार)
- फिनीशर आहार (वृद्धि काल की अंतिम अवस्था का आहार)

क्रीप/स्टार्टर आहार (नवजात मेंमनों का आहार) :

बकरी के बच्चों के पैदा होने के 1-2 घंटे के अन्दर उसे मां का प्रथम दूध अथवा चीका पिलना चाहिए। चीका में प्रोटीन, खनिज एवं विटामिन प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहते हैं। इन तत्वों के

अतिरिक्त इससे रोग प्रतिरोधक तत्व भी प्रदाय होते हैं। अतः मेंमनों को चीका पिलाना बहुत आवश्यक होता है। नवजात मेंमनों को जन्म के 4-7 दिनों तक 24 घंटे मां के साथ रखा जाकर स्वेच्छानुसार चीका तदुपरांत दुध पीने दिया जाता है। 7 दिनों के पश्चात मेंमनों को मां से अलग की सीमित मात्रा में दिन में 2-3 बार दूध पीने हेतु छोड़ा जाता है या शरीर भार के अनुसार निश्चित मात्रा में (शरीर भार का 1/10 भाग) बॉटल से दूध पिलाया जाता है। इस सीमित मात्रा में दूध पिलाने के साथ-साथ नवजात मेंमनों को एक विशेष दाना मिश्रण देते हैं जोकि क्रीप/स्टार्टर आहार कहलाता है। इस पोषण पद्धति से 3 माह में लगभग 50-75 प्रतिशत बकरी का दूध मानव उपयोग हेतु बचाया जा सकता है। सीमित मात्रा दूध एवं क्रीप आहार के अतिरिक्त मेंमनों को अच्छी गुणवत्ता वाला हरा चारा या धूप में सूखाया गया हरा चारा जिसे 'हे' कहते हैं। मेंमनों की स्वेच्छानुसार प्रदाय किया जाना उचित होता है। इन्हें स्वच्छ जल की पर्याप्त मात्रा में देना आवश्यक है। क्रीप/स्टार्टर आहार के कुछ उदाहरण तालिका - 1 में दिये जा रहे हैं। मध्यम पौष्टिकता वाले चारे जैसे विभिन्न प्रकार की घास, वृक्षों की पत्तियाँ या अन्न चारा उपलब्ध होने पर अधिक प्रोटीन एवं ऊर्जायुक्त क्रीप आहारों जोकि तालिका - 1 में क्रमांक 1-5 तक दर्शाए गये हैं का उपयोग किया जाना चाहिये। दूसरी ओर यदि अच्छी गुणवत्ता वाले फलीदार चारे जैसे बरसीम या लूसर्न की उपलब्धता होने पर कम प्रोटीन एवं ऊर्जा युक्त क्रीप आहार जो कि तालिका - 1 में क्रमांक 6-7 तक बताए गये हैं का प्रयोग करने से मेंमनों की आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है। नवजात मेंमनों के विधिवत पोषण हेतु विधि तालिका - 2 में दी जा रही है। उपरोक्त पोषण विधि के अपनाये जाने से देखा गया है कि मेंमनों में अनुशंसित वृद्धि दर प्राप्त कर 60 दिनों में जन्म वनज से 3-4 गुना एवं 90 दिनों में लगभग 5 गुना शरीर वजन प्राप्त हुआ है।

तालिका 1: नवजात मेंमनों हेतु क्रीप/स्टार्टर आहार

आहार के अवयव	संगठन (प्रतिशत)						
	1	2	3	4	5	6	7
पीसी हुआ मक्का	60	40	20	15	—	25	30
जी/जई		20	45	40	40	40	30
मूंगफली की खली	20	20	20	20	22	10	10
मछली चूर्ण	10	10	10	10	10	10	10
शीरा	—	—	—	10	20	—	10
गेहूँ चोकर/चावल चोकर/दाल चुनी	7	7	2	2	55	12	7
खनिज मिश्रण	2	2	2	2	2	2	2
नमक	1	1	1	1	1	1	1
पाच्य प्रोटीन	18	17	17	7	17	12	12
कुल पचनशील तत्व : (ऊर्जा)	78	77	75	71	70	72	70

- उपरोक्त 100 कि.ग्रा. क्रीप आहार में 150 ग्राम टी.एम. 5/ आरोफेक, 258 ग्राम बिटाब्लेड/रोविमिक्स या एक चाय का चम्मच सार्क लीवर आईल प्रति मेंमने / प्रति दिन
- मूंगफली की खली को आंशिक या पूर्ण रूप से अन्य खलियों जैसे अलसी खली, सीसम खली, कुसुम खली या सरसों खली से समान प्रोटीन के आधार पर प्रतिस्थापित किया जा सकता है।

तालिका 2: नवजात मेंमना की पोषण पद्धति (जन्म से 90 दिनों तक)

मेंमनों की उम्र	शरीर वजन (कि.ग्रा.)	आहार की संख्या प्रतिदिन	मां (जन्मदाता) या गाय का दूध (मि.ली./दिन)	क्रीप आहार	अच्छी गुणवत्ता वाला हरा चारा / फलीदार चारे की 'हे' (लूसर्न, बरसीम इत्यादि)
1	2	3	4	5	6
1-7 दिनों तक	1-3	मां के साथ रखें	300	—	—
8-30 दिनों तक	3-6	3	350	स्वेच्छानुसार	स्वेच्छानुसार
31-60 दिनों तक	6-9	2	400	100-150 ग्राम	स्वेच्छानुसार
61-90 दिनों तक	9-12	2	200	200-250 ग्राम	स्वेच्छानुसार

2. ग़ोवर आहार (वृद्धिशील मेमनों का आहार) : जन्म से 90 दिनों के उपरान्त जब मेमने 200 से 250 ग्राम दाना प्रतिदिन खाने लगते हैं तो दूध पिलाना पूर्ण रूप से बंद किया जा सकता है। पूर्ण दूध 30 दिनों बाद भी बंद करने से वृद्धि दर में खास फर्क नहीं पड़ता है।

- कम पौष्टिक आहार जैसे – वृक्षों की पत्तियाँ, विभिन्न प्रकार की घांस एवं अन्न चारे इत्यादि की उपलब्धता होने पर उन्हें संतुलित करने हेतु तालिका – 3 में दर्शाए दाना मिश्रणों का उपयोग उम्र 3–6 माह, 250 – 300 ग्राम एवं 6–9 माह, 300–350 ग्राम प्रतिदिन नस्ल एवं शरीर वनज अनुसार करना चाहिए।
- अच्छी गुणवत्ता वाला फलीदार हरा चारा या उसकी 'हे' जैसे लूसर्न, बरसीम या लोबिया उपलब्ध होने पर तालिका – 3 में दर्शाए गए दाना मिश्रणों की आवश्यकता नहीं पड़ती है केवल अनाज (मक्का, जौ, जई) एवं उसके सहउत्पाद (चावल या गेहूँ का चौकर) को 1 : 1 के अनुपात में मिलाकर उपरोक्त मात्राओं में देने से वृद्धिशील मेमनों की आवश्यकता की पूर्ति की जा सकती है।

तालिका 3: वृद्धिशील मेमनों हेतु दाना मिश्रणों का संघटन

छाना मिश्रण अवयव	संघटन (प्रतिशत)				
	1	2	3	4	5
दल्ली मक्का / ज्वार / चांव कोड़ा	50	30	—	30	12
दाल चूनी	—	—	—	30	35
जौ / जई	—	—	50		
गेहूँ का चौकर	30	42	20	30	30
मूंगफली खली	10	25	20	—	15
शीरा	7	—	7	7	5
खनिज मिश्रण	2	2	2	2	2
नमक	1	1	1	1	1

3. फिनीसर आहार (वृद्धिकाल की अंतिम अवस्था का आहार) : यह आहार वृद्धिकाल के अंतिम अवस्था में दिया जाने वाला आहार होता है। यह आहार प्रायः छोटी नस्ल में 15 किग्रा एवं बड़ी नस्ल में 20 कि ग्राम शरीर वजन प्राप्त होने के बाद से क्रमशः 25 एवं 35 किग्रा. वजन प्राप्त होने तक दिया जाता है। इस अवस्था में कम प्रोटीन एवं ऊर्जा युक्त आहारों से पोषक तत्वों की आवश्यकता की पूर्ति की जा सकती है। सामान्यतः शरीर वजन का लगभग 1/3 भाग 1 भार में वृद्धि इसी काल में होती है। इस अवस्था में पोषण विधि तय करने हेतु ग्राहकों की मांग का ध्यान रखा जाना चाहिए कि वे किस तरह का मांस चाहते हैं उदाहरणार्थ कुछ लोग अधिक चर्बी युक्त तो कुछ कम चर्बीयुक्त मांस ज्यादा पसंद करते हैं। अधिक चर्बीयुक्त मांस उत्पादन हेतु प्रतिदिन के कुल आहार में चारे का उपयोग मात्र 20 – 25 प्रतिशत (शुष्क तत्व के आधार पर) एवं 75 – 80 प्रतिशत अधिक ऊर्जायुक्त दाना मिश्रणों का प्रयोग किया जाना चाहिए। दूसरी ओर यदि कम चर्बीयुक्त मांस की मांग अधिक है तो आहार में चारों का उपयोग 30 से 40 प्रतिशत तक एवं दाना मिश्रण 60 – 70 प्रतिशत होना चाहिए। दाने के रूप में विभिन्न दालों की चूनीयों जैसे अरहर, मूंग या चना से किसी 1 या 2 चूनीयों में 2 प्रतिशत खनिज मिश्रण एवं 1 प्रतिशत नमक एवं 10–25 ग्राम प्रति 100 किग्रा विटामिन – 'ए' का पाउडर मिलाकर सम्पूर्ण आहार के रूप में बिना चारा खिलाए भी इस काल में वृद्धिशील बकरों/बकरीयों की आवश्यकता की पूर्ति की जा सकती है बशर्त दाल चूनीयो ताजी हो एवं उनमें बहुत ज्यादा फलले/छिलके की मात्रा न हो।

बकरीयों हेतु सामान्य भोज्य सामग्री:

1. वृक्षों की पत्तियाँ, झाड़ियाँ, पौधे, बेले :- उदाहरण के लिए पकार, गुलर, पीपल, नीम, खनड़ा, भिमल, सिरिस, रियाँ, बबूल, गोखरू, बेर, झरबेरी, सूबबूल एवं गस्ती इत्यादि।
2. विभिन्न प्रकार की घांस-दूब, मेथ, जारगा, सवाईन, कनकुवा, अजन, पेनिक इत्यादि।
3. सब्जियों के अवशिष्ट : गाजर का ऊपर वाला भाग, मूली की एवं फूलगोभी की पत्तियाँ, पत्ता गोभी, सरसों, मटर की फली का छिलका एवं अन्य सब्जियों के छिलके इत्यादि।
4. खेतों में ऊगाया जाने वाला हरा चारा एवं सूखा चारा :-
(अ) फलीदार चारा :- जैसे की मटर, लोबिया, बरसीम, लूसर्न इत्यादि।
(ब) बिना फलीदार चारा :- मक्का, ज्वार, पैरा, सेटोरिया, ज्वार इत्यादि, दलहनी फसलों का भूसा इत्यादि।